108

भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति (वैश्वीकरण के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. सुशीला
असि. प्रो.-समाजशास्त्र
कु.मा.रा.म.स्ना.महा.
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

कु. आरती
शोध छात्रा-समाजशास्त्र
कु.मा.रा.म.स्ना.महा.
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

वैश्वीकरण

एक विश्वव्यापी व्यापार विधा के रूप में वैश्वीकरण यद्यपि एक नवीन अभिगम है किन्तु इसकी जड़ें द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के पाँच दशकों में निहित हैं। 20 वीं सदी के समापन के दौर में उदारीकरण एवं निजीकरण पर विशेष बल देते हुए वैश्वीकरण का उदघोष किया।

ऑक्सफोर्ड समाजशास्त्र के शब्दकोष के अनुसार- वैश्वीकरण को एक उस सम्पूर्ण संरचना के रूप में वर्णित किया गया है जो पूरे विश्व में वैश्विक स्तर पर जागरुकता बढ़ा रहा है।

एंथनी गिडिंग्स (1990)- वैश्वीकरण विरोधाभासी और असमान प्रक्रिया है। गिडिंग्स के अनुसार यह स्थानीय समुदाय एवं राष्ट्रों से दूर खींचता है, फिर भी वैश्वीकरण कुछ समुदायों और राष्ट्रों के राज्यों पर धाराशाही होता है। इसका अर्थ है कि जिस प्रकार से अलौकिक राजनीतिक संगठनों ने राष्ट्र राज्यों पर कुछ क्षमताओं एवं शक्तियों को कमजोर कर दिया है। वैश्वीकरण के कारण प्रवृत्तियों के विपरीत सेट को संदर्भित करता है। यहां वैश्वीकरण स्थानीय समुदायों की मांगों की संभावनाओं के साथ हो सकता है।

गिडिंग्स का तात्पर्य है कि आधुनिक क्रान्तिकारी प्रक्रिया पर अपने दृष्टिकोण की व्याख्या के लिए 1960 से नई क्रांतिकारी वैश्वीकरण प्रक्रिया उत्पन्न होती है। यह विश्वास है कि वैश्वीकरण के बीज 1960 से आधुनिकीकरण की प्रक्रिया से लगाऐ गये हैं क्योंकि वैश्वीकरण के रूप में आधुनिकीकरण प्रक्रिया के चार पहलू शामिल किए गये हैं

(1) पूँजीवाद
(2) औद्योगिकीकरण
(3) एडमिनिस्ट्रेटिव फेज
(4) मिलिट्री पावर

Scanned by CamScanner